हवन कुंड के प्रकार

चतुराकार हवन कुंड

अष्टकोण आकार हवन कुंड

षट्कोण आकार हवन कुंड

वृत आकार हवन कुंड
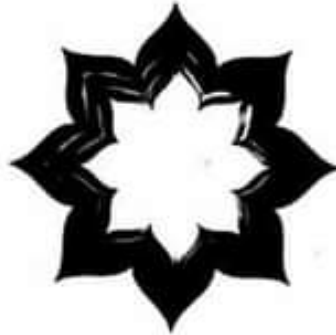
पद्म कुंड

त्रिभुज आकार हवन कुंड

अर्ध चक्र आकार हवन कुंड

कुण्ड मण्डप-रचना/कुण्डमण्डप-निर्माण

शारदातिलक में कहा है- शुभ मुहूर्त में जब नक्षत्र, राशि तथा वार अनुकूल हों तब तुषाङ्गार-वर्जित शुद्ध भूमि पर पुण्याहवाचन कर शुभ मण्डप की रचना करनी चाहिये। मण्डप पाँच हाथ (५×५=२५ वर्ग हाथ) अथवा सात हाथ (७×७ = ४९ वर्ग हाथ), अथवा नौ हाथ (९ × ९ = ८१ वर्ग हाथ) का बनावें।

- मण्डप में कुल सोलह स्तम्भ होने चाहिये, जिनमें चार मध्य में तथा शेष बारह आठो दिशाओं एवं कोणों में होने चाहिये।
- मध्य के चार स्तम्भ आठ हाथ ऊँचाई के हों तथा शेष बारह स्तम्भ पाँच हाथ ऊँचाई वाले होने चाहिये।
- स्तम्भ सीधे, छेदरहित तथा सुन्दर हों। स्तम्भों की लम्बाई का पाँचवाँ भाग (१/५ भाग) भूमि में

गाड़ना चाहिये।

- नारियल के पत्ते, बाँस आदि से मण्डप को आच्छादित करना चाहिये।
- पूर्वादि द्वारों पर क्रमशः क्षीरीवृक्षों द्वारा निर्मित चार तोरण होना चाहिये।
- उन तोरणों के स्तम्भों की ऊँचाई पृथक्-पृथक् सात हाथ की होनी चाहिये।
- उन तोरण स्तम्भों का परीणाह (मोटाई) दश अङ्गुल होना चाहिये।
- उनके ऊपर का तिर्यक् फलक (तिरछा तख्ता) साढ़े तीन हाथ का होना चाहिये।
- उन फलकों के मध्य में एक हाथ प्रमाण के त्रिशूल लगाने चाहिये।
- मण्डप की दशों दिशाओं में दिक्पालों एवं लोकपालों के वर्गों के वस्त्र की पताका बनवाकर

लगायें।

- मण्डप को वितान, आदर्श तथा देवी-देवताओं के चित्रों से सजावें।

- मण्डप के क्षेत्र के एक तिहाई भाग में अरलि प्रमाण (२१ अङ्गुल) चौकोर वर्गाकार वेदी बनानी चाहिये।

- पुनः उस मध्यवेदी की आठ दिशाओं में रमणीय आकार के कुण्डों की रचना करनी चाहिये।

- चतुरस्रकुण्ड, योनिकुण्ड, अर्धचन्द्रकुण्ड, त्रिकोणकुण्ड, वर्तुलकुण्ड, षडस्रकुण्ड, पद्मकुण्ड तथा अष्टास्रकुण्ड क्रमशः पूर्वादि आठ दिशाओं में बनते हैं।

- ईशान तथा पूर्व दिशा के मध्य में आचार्यकुण्ड को (चतुरस्राकार) बनाना चाहिये।

- कुण्ड निर्माण के लिये एक हाथ भूमि का उपयोग करना चाहिये। यह चौकोर होनी चाहिये।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

- तन्त्रवेत्ताओं ने चौबीस अङ्गुल का हाथ माना है।
- हाथ की माप कर्ता के दक्षिण हस्त की मध्यमाङ्गुलि के मध्य पर्व से अङ्गुलात्मक करें। एक अङ्गुल में आठ यव होते हैं।

मण्डप भूमि के नौ विभाग

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर	मध्य	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

नवकुण्डी पक्ष में कुण्ड-निवेशन

ईशान		पूर्व		आग्नेय
	अष्टास्र कुण्ड, आचार्य कुण्ड (वृत्त)	चतुरस्र कुण्ड	योनि कुण्ड	
उत्तर	पद्म कुण्ड	मध्य वेदी	अर्धचन्द्र कुण्ड	दक्षिण
	षडस्र कुण्ड	वर्तुल कुण्ड	त्रिकोण कुण्ड	
वायव्य		पश्चिम		नैर्ऋत्य

नक्षत्रराशिवाराणामनुकूले शुभेऽहनि।
ततो भूमितले शुद्धे तुषाङ्गारविवर्जिते ॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

पुण्याहं वाचयित्वा तु मण्डप रचयेच्छुभम्।
पञ्चभिः सप्तभिहस्तैर्नवभिर्वा मितान्तरम् ॥
षोडशस्तम्भसंयुक्तं चत्वारस्तेषु मध्यगाः।
अष्टहस्तसमुच्छ्रायाः संस्थाप्या द्वादशाभितः ॥
पञ्चहस्तप्रमाणास्ते विच्छिद्रा ऋजवः शुभाः।
तत्पञ्चमांशं निखनेन्मेदिन्यां तन्त्रवित्तमः ॥
नारिकेलदलैर्वशैश्च्छादयेत्तत्समन्ततः।
द्वारेषु तोरणानि क्रमात्क्षीरमहीरुहाम् ॥
स्तम्भोच्छ्रायः स्मृतस्तेषां सप्तहस्तैः पृथक् पृथक्।
दशाङ्गुलप्रमाणेन तत्परीणाह ईरितः ॥
तिर्यक् फलकमानं स्यात्स्तम्भानामर्द्धमानतः।
शूलानि कल्पयेन्मध्ये तोरणे हस्तमानतः ॥
दिक्षु ध्वजान्निबध्नीयाल्लोकपालसमप्रभान्।
वितानादर्शमालाद्यैरलंकुर्वीत मण्डपम् ॥
तत्रिभागमिते क्षेत्रेऽरत्निमात्रसमन्विताम्।
चतुरस्त्रां ततो वेदिं मण्डलाय प्रकल्पयेत् ॥
प्राक् प्रोक्ते मण्डपे विद्वान्वेदिकाया बहिस्त्रिधा।

क्षेत्रं विभज्य मध्यांशे पूर्वादि परिकल्पयेत् ॥
अष्टास्वाशासु कुण्डानि रम्याकाराण्यनुक्रमात्।
चतुरस्त्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्त्रं सुवर्तुलम् ॥
षडस्त्रं पङ्कजाकारमष्टास्त्रं तानि नामतः।
आचार्यकुण्डं मध्ये स्यागौरीपतिमहेन्द्रयोः ॥
हस्तमानमितां भूमि पूर्ववत् परिकल्पयेत्।
समन्तात्कुण्डमेतत्स्याच्चतुरस्त्रं शुभावहम् ॥
चतुर्विंशत्यङ्गुलाढ्यं हस्तं तन्त्रविदो विदुः।
कर्तुर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमाङ्गुलिपर्वणः ॥
मध्यस्य दीर्घमानेन मानाङ्गुलमुदीरितम्।
यवानामष्टभिः क्लृप्त मानाङ्गुलमुदीरितम् ॥
(मण्डप ण्डपकुण्डादिनिर्माणप्रकारः शारदातिलके)

योनिकुण्ड रचनाविधि

एक हाथ के वर्गाकार क्षेत्र को पाँच भागों में विभक्त करें। एक भाग को नीचे कोणों के आधे-आधे भाग पर स्थित विन्दुओं से सामने की भुजा के मध्य विन्दु तक दो सूत्र देवें तथा उक्त कोणार्ध विन्दुओं से कर्कटिक (परकार) को दोनों ओर के कोणार्थों से मध्य विन्दु तक दो अर्धवृत्त बनावें। इस प्रकार योनिकुण्ड सिद्ध हो जाता है।

सन्दर्भ-

चतुरस्त्रीकृतं क्षेत्रं पञ्चधा विभजेत्सुधीः।

न्यसेत्पुरस्तादेकांशं कोणार्द्धार्द्धप्रमाणतः ॥

भ्रामयेत्कोणमानेन तथान्यदपि मन्त्रवित् सूत्रयुग्मं

ततो दद्यात्कुण्डं योनिनिभं भवेत् ॥

अर्धचन्द्रकोण कुण्ड रचना

विधि- एक वर्ग हाथ के चतुरस्त्र क्षेत्र को दश भागों में विभाजित करे। ऊपर नीचे एक-एक भाग छोड़कर ज्यासूत्र का पातन करे तो अर्धचन्द्राकार रमणीय

कुण्ड बन जाता है।

सन्दर्भ-

अर्द्धचन्द्राकारकुण्डरचना

चतुरस्त्रीकृतं क्षेत्र दशधा विभजेत्पुनः।

एकमेक त्यजेदंशमध ऊर्ध्व च तन्त्रवित् ॥

ज्यासूत्र पातयेदने तन्मानाद्भ्रामयेत्ततः।

अर्द्धचन्द्रनिर्भ कुण्डं रमणीयमिदं भवेत् ॥

त्र्यस्र कुण्डरचना

यह त्रिभुजाकार कुण्ड होता है। पार्श्वों की भुजाओं से आमने-सामने सूत्र देकर क्षेत्र का चार भाग करना चाहिये। उसके मान से एक-एक भाग आगे चिह्न बनाते हुए दो सूत्रों को देने से त्रिकोण कुण्ड बन जाता है।
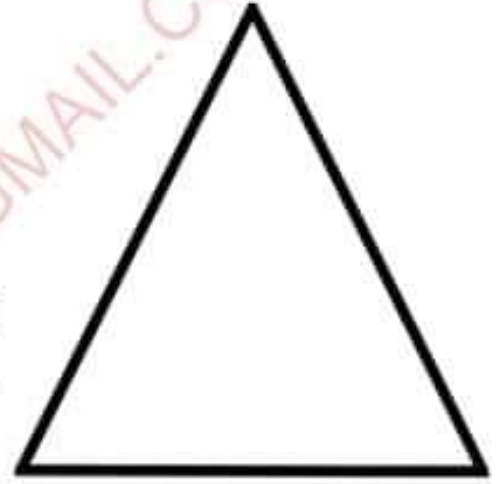
संदर्भ

चतुर्दा भेदिते क्षेत्रे न्यसेदुभयपार्श्वयोः।

एकैकमंश तन्मानादग्रतो लाञ्छयेत्ततः ॥

सूत्रयुग्मं ततः कुर्यात्त्र्यत्रं कुण्डमुदाहृतम् ॥

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

वृत्तकुण्ड की रचना विधि

चतुरस्र क्षेत्र के मध्य से उसका अठारहवाँ भाग सूत्र लेकर चारो ओर घुमा देने से वर्तुल का आकार बन जाता है, उस पर वृत्तकुण्ड का निर्माण करना चाहिये।
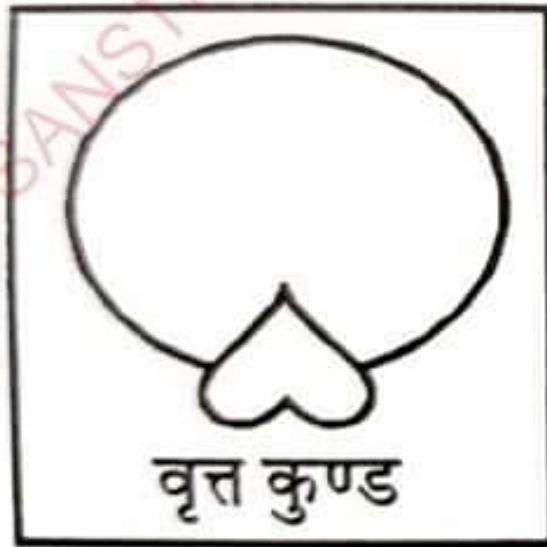
सन्दर्भ

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

अष्टादशांशे क्षेत्रे च न्यसेदेकं बहिर्बुधः।

भ्रामयेत्तेन मानेन वृत्तं कुण्डमनुत्तमम् ॥

षडस्रकुण्ड निर्माण विधि

षडस्र अर्थ छः भुजा वाला होता है। छः भुजा वाले कुण्ड की निर्माण-विधि निम्न प्रकार है-

चार चतुष्कोण मत्स्य क्षेत्र बनायें को और अष्टधा छः विभाजित सूत्र देकर करें उत्तम। मध्यवर्ती षडस्रकुण्ड सूत्र बन के पार्श्व जाता से है एक भाग छोड़कर दो पार्यों में सूत्र घुमाकर चार मत्स्य बनायें और छः सूत्र सूत्र देकर उत्तम षडस्र

कुण्ड बन जाता है।

सन्दर्भ-

अष्टधा विभजेत्क्षेत्रं मध्यसूत्रस्य पार्श्वयोः।

भागं न्यसेदेकमेकं भागेनानेन मध्यतः ॥

कुर्यात्पार्श्वद्वये मत्स्यचतुष्कं तन्त्रवित्तमः।

सूत्रषट्कं ततो दद्यात्षडस्त्रं कुण्डमुत्तमम् ॥

पद्मकुण्ड निर्माण विधि

कमल के आकार का होने से इसे पद्मकुण्ड अथवा अब्जकुण्ड भी कहते हैं। चतुरस्र एक हाथ के क्षेत्र को अठारह भागों में विभाजित करें। एक परिष्कर वृत्त बनायें। मध्य से

बाहर की ओर कर्णिकादि के निर्माण के लिये तीन वृत्त बनायें तो नेत्रों को मनोहर पद्मकुण्ड बन जाता है।

सन्दर्भ-

चतुरस्रीकृतं क्षेत्रं विभज्याष्टादशांशतः।
वृत्तानि कर्णिकादीनां बहिस्त्रीणि प्रकल्पयेत्।।
एकं भागं बहिर्यस्य भ्रामयेत्तेन वर्तुलम् ॥
पद्मकुण्डमिति प्रोक्तं विलोचनमनोहरम् ॥

चतुरस्र कुण्ड निर्माण विधि

एक भाग चतुरस्रकुण्ड बाहर छोड़कर-इसे चतुरस्र

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

चौकोर बनायें या चतुष्कोण तो चतुरस्र अथवा कुण्ड वर्गाकार बन जाता कुण्ड है। भी कहते हैं। क्षेत्र के चौबीस भाग करें एक भाग बाहर छोड़ कर चतुरस्र बनाएं तो चतुरस्र कुण्ड बन जाता है।

सन्दर्भ-

पूर्ववद्विभजेत्क्षेत्रं चतुर्विंशतिभागतः।

एक भागं बहिर्न्यस्य चतुरस्त्रं प्रकल्पयेत् ॥

अष्टास्र कुण्ड निर्माण विधि

यह अष्टभुजी कुण्ड होता है। इसकी आठों भुजाएँ समान होती हैं। चतुरस्र के भीतर कोणार्ध प्रमाण के बाह्य चतुरस्र के कोणों की कल्पना करे। तात्पर्य यह है कि सम चतुर्भुज के भीतर उसके

कोण को काटता हुआ अन्य चतुर्भुज बनायें और फिर आठ दिशाओं में आठ सूत्र मध्य से देकर अष्टास्र कुण्ड बन जाता है; ऐसा तन्त्रविदों का मत है।

सन्दर्भ

अन्तःस्थचतुरस्त्रस्य कोणादर्द्धप्रमाणतः।

बाह्यस्य चतुरस्त्रस्य कोणाभ्यां परिकल्पयेत् ॥

दिश प्रति यथान्यासमष्टी सूत्राणि पातयेत्।

अष्टास्त्रं कुण्डमेतद्धि तन्त्रविद्भिरुदाहृतम् ॥

कुण्ड का खनन एवं मेखलायें

- कुण्ड के आकार का जैसा कुण्ड का विस्तार हो, भूमिसतह से नीचे उतना ही खोदकर कुण्ड की गहराई बनानी चाहिये।
- जैसा कुण्ड का स्वरूप हो, भूमि से ऊपर मेखलाएँ भी उसी आकार की बनानी चाहिये।

- प्रत्येक कुण्ड में तीन मेखलाएँ लगानी चाहिये। वे प्रत्येक मुष्टिमात्र चौड़ी होनी चाहिये।
- उनकी ऊँचाई क्रमश: दो अङ्गुल, एक अङ्गुल तथा आधी अङ्गुल होनी चाहिये।
- यदि कुण्ड अरत्निमात्र (२१ अङ्गुल) का हो तो तीन अङ्गुल, दो अङ्गुल तथा एक अङ्गुल की मेखला बनायें।
- एक हाथ प्रमाण के कुण्ड में चार अङ्गुल, तीन अङ्गुल, दो अङ्गुल की मेखलाएँ क्रमश: बनानी चाहिये।
- मेखलाओं के भीतर चारो ओर एक अङ्गुल नेमि (कण्ठ) रखनी चाहिये।
- मेखलाओं के मान की वृद्धि कुण्ड के विस्तार के अनुरूप होती है।
- दश हाथ के कुण्ड में प्रतिहस्त आधा अङ्गुल बढ़ा

दें।

- दो हाथ के कुण्ड में मेखला से छः अङ्गुल, चार अङ्गुल तथा दो अङ्गुल होनी चाहिये।
- आठ हाथ के कुण्ड में बारह अङ्गुल, दश अङ्गुल तथा आठ अङ्गुल; दश हाथ के कुण्ड में बारह-बारह तथा दश अङ्गुल की मेखलाएँ होनी चाहिये। इस प्रकार मेखलाओं का विस्तार जानना चाहिये।
- होता के अग्रभाग में पीपल के पत्ते के आकार की योनि बनानी चाहिये।
- चार हाथ के कुण्ड में मेखलामान क्रमशः आठ-छः तथा दो अङ्गुल होता है।
- छः हाथ के कुण्ड में मेखलामान दश-आठ-छः अङ्गुल होना चाहिये।

यावत्कुण्डस्य विस्तारः खननं तावदीरितम्।
कुण्डानां यादृशं रूपं मेखलानां च तादृशम् ॥
कुण्डानां मेखलास्तिस्रो मुष्टिमात्रे तु ताः क्रमात्।
उत्सेधायामतो ज्ञेया द्वयेका ङ्गुलसम्मिताः ॥
अरत्निमात्रे कुण्डे स्युस्तास्त्रिद्वयेकाङ्गुलात्मिकाः।
एकहस्तमिते कुण्डे वेदाग्निनयनाङ्गुलाः ॥
मेखलानां भवेदन्तः परितो नेमिरङ्गुलात्।
एकहस्तस्य कुण्डस्य वर्द्धयेत्तत्क्रमात्सुधीः ॥
दशहस्तान्तमन्येषाम ङ्गुलवशात्पृथक्।
कुण्डे द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेदगुणाङ्गुलाः ॥
चतुर्हस्तेषु कुण्डेषु वसुतर्कयुगाङ्गुलाः।
कुण्डे रसकरे ताः स्युर्दशाष्टत्वङ्गुलान्विताः ॥
वसुहस्तमिते कुण्डे भानुपङ्क्त्यष्टकान्विताः।
दशहस्तमिते कुण्डे भानुभानुदशाङ्गुलाः ॥
विस्तारोत्सेधतो ज्ञेया मेखला सर्वतो बुधैः।
होतुरग्रे योनिराशामुपर्यश्वत्थपत्रवत् ॥
मुष्टयरत्न्येकहस्तानां कुण्डानां योनिरीरिता।
षट्चतुर्थङ्गुलायामविस्तारोन्नतिशालिनी।।
एकाङ्गुलं योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखम्।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

एकैकाङ्गुलतो योनि कुण्डेष्वन्येषु वर्द्धयेत् ॥
यवयवक्रमेणैव योन्यग्रमपि वर्द्धयेत्।
स्थलादारभ्य नालं स्याद्योन्या मध्यं सरन्धकम् ॥
नार्पयेत्कुण्डकोणेषु योनि तां तन्त्रवित्तमः।
कुण्डानां कल्पयेदन्त भिमम्बुजसन्निभाम् ॥
तत्तत्कुण्डानुरूपं वा मानमस्य निगद्यते।
मुष्टयरल्येकहस्ताभ्यां नाभिरुत्सेधतारतः ॥
द्वित्रिवेदाङ्गुलोपेता कुण्डेष्वन्येषु वर्द्धयेत्।
यवद्वयक्रमेणैव नाभिं पृथगुदारधीः ॥
योनिकुण्डे योनिमब्जकुण्डे नाभिं विवर्जयेत्।
नाभिक्षेत्रं त्रिधा भित्त्वा मध्ये कुर्वीत कर्णिकाम् ॥
बहिरंशद्वयेनाष्टौ पत्राणि परिकल्पयेत् ॥

कुण्डका स्वरूप

' कुण्ड (कुण्डलक्ष्मी) का पूर्व दिशा में सिर कहा गया है,

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

ईशान और अग्निकोणमें उसकी दो भुजाएँ कही गई हैं, वायव्य और नैऋत्य कोण में दो जङ्घाएँ कही गई हैं, कुण्ड उसका उदर (पेट) कहा गया है और कुडकी योनि उसकी योनि कही जाती है।(क)

कुण्डके स्वरूपको प्रकृतिका परम शरीर जानना चाहिये। पूर्व दिशामें उसका सिर कहा गया है, दक्षिण और उत्तरमें उसके दो।बाहू कहे गये हैं, कुण्ड उदर कहा गया है, योनि और पैर पश्चिममें कहे गये हैं।'(ख)

सन्दर्भ-

शिरः प्राच्यां समाख्यातं बाहू कोणे व्यवस्थितो।

ईशानाग्नेयकोणे तु जो वायव्यनैऋते ।।

उदरं कुण्डमित्युक्तं योनोनिर्विधीयते। (अग्निपुराण ३४।३६-३७)

(ख)कुण्डस्वरूपं जानीयात् परमं प्रकृतेर्वपुः।

प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः ॥

उदरं कुण्डमित्युक्तं योनिः पादौ तु पश्चिमे। (शारदातिलक ३।६०-६१)

योनि-प्रमाण

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

अरनि तथा एक हाथ के कुण्ड की योनि छः अङ्गुल चौड़ी तथा दो अङ्गुल ऊँची होनी चाहिये। योनि का अग्रभाग एक अङ्गुल दीर्घ तथा नीचे को झुका हुआ होना चाहिये। कुण्डमान में एक हाथ की वृद्धि होने पर योनि के मान में भी एक हाथ की वृद्धि हो जाती है। प्रति हाथ कुण्डवृद्धि के साथ योन्यग्र की वृद्धि एक यव होनी चाहिये।

नाभिनाल

योनि के मध्य में स्थल से आरम्भ करके छिद्रसहित नाल बनाना चाहिये

कोणों में योनि का निषेध

कुण्डों के कोणों में योनि कभी नहीं लगानी चाहिये (अपितु निर्देशानुसार पश्चिम, दक्षिण या पूर्व दिशा में ही योनि का निवेश करे)।

नाभि

कुण्ड के भीतर स्थल भाग में कमल के आकार की नाभि बनानी चाहिये। अथवा कुण्डों की आकृति के अनुसार ही नाभि का आकार रखना उचित है। मुष्टि प्रमाण अरनि प्रमाण तथा एक हस्त २ यव के अनुपात से बढ़ावें।

योनि एवं नाभि में विशेष

योनिकुण्ड में योनि नहीं लगानी चाहिये, उसी प्रकार पद्मकुण्ड में नाभि नहीं बनानी चाहिये।

कर्णिका

नाभिक्षेत्र के तीन भाग कर मध्य में कर्णिका बनानी चाहिये तथा बाहर के दोनों भागों में आठ दिशाओं में आठ पत्रों का निर्माण करना चाहिये।

कुण्ड के अभाव में स्थण्डिल का निर्माण

यदि कुण्ड न बनाया जा सके तो नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य कर्मों के लिये स्थण्डिल बनाना चाहिये। उसे

हाथ भर लम्बा तथा हाथ भर चौड़ा चौकोर तथा एक अङ्गुल ऊँचा बनाना चाहिये। इसका निर्माण स्वच्छ बालुका अथवा मृत्तिका से करें।

सन्दर्भ

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं स्थण्डिले वा समाचरेत्।

हस्तमात्रेण तत्कुर्याद्वालुकाभिः सुशोभनम्।

अङ्गुलोत्सेधसंयुक्तं चतुरस्त्रं समन्ततः ॥

बौधायनमत से कुण्डाकार स्थण्डिल

बौधायन का मत है कि जिस प्रकार का कुण्ड बनाना प्रस्तावित हो, उसी प्रकार के आकार वाला स्थण्डिल बनायें। उसमें मेखला तथा योन के चिह्न भी अंकित करें। अथवा चतुरस्त्र स्थण्डिल बनाना चाहिये। कुण्ड के अभाव में स्थण्डिल या पीठ का निर्माण किया जाता है।

सन्दर्भ

कुण्डवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परम्।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

बौधायनमते प्रोक्तं स्थण्डिलं चतुरस्त्रकम् ॥

कुण्डाभावे तु होमाथ स्थण्डिलं पीठमेव वा ॥

कुण्ड के खात/गड्ढे का फल

खात का अर्थ कुण्ड की गहराई से है। हेमाद्रि में कहा है-खात की अधिकता से होमकर्ता यजमान रोगी होता हैं। यदि निर्धारित खात से कम खात हो तो गाय, भैंस, वाहन तथा धन-धान्य की हानि होती है। यदि कुण्ड टेढ़ा हो जाय तो सन्ताप की प्राप्ति होती है। यदि कुण्ड की मेखला टूटी, फटी हो तो मृत्यु या मृत्यु के समान कष्ट होता है। बिना मेखला के कुण्ड से शोक की प्राप्ति होती है निर्धारित से अधिक मेखला होने पर धन की हानि होती है। बिना योनि के कुण्ड से भार्या की मृत्यु होती है। यदि कुण्ड में कण्ठ न हो तो सन्तान की हानि होती है।

सन्दर्भ-

खातेऽधिके भवेद्रोगी हीने धेनुधनक्षयः।

वक्रकुण्डे तु सन्तापो मरणं भिन्नमेखले ॥

मेखलारहितो शोकोऽप्यधिके वित्तसंक्षयः।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

भार्याविनाशनं प्रोक्तं कुण्डे योन्या विना कृते ॥

अपत्यध्वंसनं प्रोक्तं कुण्डं यत्कण्ठवर्जितम् ॥ हेमाद्रि

उपर्युक्त मृत्यु से आशय आठ प्रकार की मृत्यु से है -

व्यथा दु:खं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।

मरणं चापमानञ्च मृत्युरष्टविधः स्मृतः ॥-बृहदैवज्ञरंजनम्

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661